ॐ

श्रीवीतरागाय नम

ज्ञान बहोत्तरी।

तथा

सम्यक्तरा ६७ बोल।

प्रसिद्धकर्त्ता—

भैरोंदानजी तत्पुत्र जुगराज

ज्ञानपाल सेठिया।

बीकानेर निवासी।

JUGRAJ GAINPAL SETHIA,

Bikaner Rajputana

J B Ry

मूल्य बाल शिक्षा
प्रति २०८०



वीर संवत् २४४६
विक्रम सवत् १९७६
ई० सन् १९१९

❀ सूचना ❀

दोहा—

पाणी पास मत राखो, तेल अग्नि सु दूर ।
मूर्ख हाथ मत दीजिये, जोखम खाय जरूर ॥१॥

यह पुस्तक जयणासे वाचे और जयणासे रखे इसमें कोई अशुद्धि रहगई हो तो सज्जन सुधार कर वाचे और कृपा कर हमको सूचना दें यही प्रसिद्ध कर्त्ता की नम्र विनती है ।



बी॰ एल॰ प्रेस ११२ मछुआबाजार ष्ट्रीट, कलकत्ता में
बांकेलाल वर्मा द्वारा मुद्रित ।

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

अथ श्री ज्ञान वहोतरि लिख्यते

दोहा ।

प्रणमु श्री परमातमा, धर सद्गुरु को ध्यान ।
कछुक आतम बोधको, करु वहुतर ज्ञान ॥ १ ॥

१ पहले बोले—महा दुर्लभ मनुष्य जन्म पाय करके आपणि आतमा आलस्य प्रमाद और मोह में दिन गमावे सो महा मूर्ख ।

२ दूसरे बोले—धर्म्म की सर्व सामग्री पायके आत्मारो साधन नहीं करे सो महा मूर्ख ।

३ तीसरे बोले—पुण्य रूप पुंजि तो साथ

लायो नहीं और सुखी होवारे वास्ते घणी हाय हाय करे अधिक तृष्णा वधावे सो महा मूर्ख।

४ चौथे बोले—कोई पुण्यरा उदय सु ज्ञानरी प्राप्ति हुई, लोभ शत्रुने दुखदाई जाण्यो, फिर सतोष नहीं राखे सो महा मूर्ख।

५ पांचवे बोले—कोई सद्गुरु की कृपासु ज्ञान रत्न पायो, तिणसुं अधिरज पणुं खोटो जाण्यो फिर संसार सम्बन्धि कष्ट आय पड़े, तिणारो धीरजता न राखे सो महा मूर्ख।

६ छट्ठे बोले—ज्ञान पायो तिणसु करी ससार असार जाण्यो, फिर झूंठ बोले प्रपंच करे, क्लेश वढावे सो महा मूर्ख।

७ सातमें बोले—आत्मारी शक्ति प्रमाणे सौगन व्रत पच्चखाण नहीं करे, कोई जीव सौगन लेकर भागे सो महा मूर्ख।

८ आठमें बोले—पूर्व जन्मरा पापरा उदय

कसी दुख आवे, तिवारे आत्मारे विषे ज्ञान विचारी शीतलता नहीं करे सो महा मूर्ख ।

९ नवमे बोले—साता वेदनीरे उदय करी सुख आवे तिवारे अभिमान करे, धर्मरत्न विशार देवे सो महा मूर्ख ।

१० दशमे बोले—ज्ञान बढ़ावा को उपाय तो नहीं करे और संसार बढ़ावा का घणा खोटा उपाय करे सो महा मूर्ख ।

११ ईग्यारमे बोले—उत्तम ज्ञानी की संगत पाय कर आपणि आत्मा राग द्वेष रहित निर्मल नहीं करे, अथवा उपाय नहीं करे सो महा मूर्ख ।

१२ बारमे बोले—ज्ञानवानरी सेवा भक्ति करीने आपणि आत्मा उज्वल पाप रहित न करे सो महा मूर्ख ।

१३ तेरमे बोले—व्रत पच्चखाणरे विषय दृढ़ता नहीं राखे कष्ट पड़े तिवारे धर्म्म ने छोड़ देवे सो महा मूर्ख ।

१४ चवदमे बोले—ससारी कामारो तो नियम राखे, और आखा दिन माहि दोय घड़ी धर्म्म कार्य्य करणे को नियम राखे नहीं सो महा मूर्ख।

१५ पन्नरमें बोले—कोई उत्तम जीव धर्म रो उपदेश देवे, हिनरी शिक्षा देवे तिण उपर रीस करे सो महा मूर्ख।

१६ सोलमे बोले—ज्ञान रत्न पायो तिणसु ससार असार जाणे और मोह ममता दुखदाई, ससार वृद्धि रा कारण जाणया फिर मोह दुखदाई ससाररी वृद्धिरा कारण वढ़ावे सो महा मूर्ख।

१७ सतरमे बोले—थोड़ासा जीववारे वास्ते महा आरभ करे, कषाय करे, पर जीवा ने दुख उपजावे, अथवा घणा भय उपजावे सो महा मूर्ख।

१८ अट्ठारमे बोले—आपणो चैतन्य अनादि काल रो काम क्रोध, लोभ मोह, अज्ञान रूप

बंधन में पड्यो है तिणने छोडावारो उपाय नहीं करे सो महा मूर्ख ।

१६ उन्निसमें बोले—पापी दुष्टी जीव पार की ऋद्धि तथा घणो परिवार देखी आप पोते झुरे, और मनमें खोटा विकल्प करे, 'ऐसी ऋद्धि मने क्यो नहीं मिली' सो महा मूर्ख ।

२० वीसमें बोले—दुष्ट जीव परका अवगुण देखे, आपणा अवगुण देखे नहीं आछो गुणवान देखी तीण मांहि खोट काढ़े सो महा मूर्ख ।

२१ इकविसमें बोले—सुखी होवारे अर्थे जीभ का स्वाद अर्थे तथा कामभोग सेवा अर्थे घणा पाप करे, घणा छल भेद करीने परिग्रह भेलो करे सो महा मूर्ख ।

२२ बाविसमें बोले—देहने पोखवारे अर्थे जीभ का स्वाद अर्थे तथा कामभोग सेवा अर्थे घणा जीवा को नाश करे सो महा मूर्ख ।

२३ तेइसमें बोले—सर्व जीवांने आपणी आत्मा सरीखा जाण कर फिर दयारा परीणाम नहीं राखे सो महा मूर्ख ।

२४ चोविसमें बोले—वचन विचारने बोले नहीं पाप सहित, हासि सहित, भय सहित, अन्याय सहित, सराप सहित, ऐसा वचन बोले सो महा मूर्ख ।

२५ पचिसमें बोले—विना अर्थ दिन गमावे मनुष्य जन्म का वक्त सहज में विकथा मांहि दिन गमावे सो महा मूर्ख ।

२६ छव्विसमें बोले—ज्ञानवान होय, पांच इन्द्रिय के भोग की इच्छा वधावे, मन इन्द्रिय ने वश नहीं करे सो महा मूर्ख ।

२७ सत्ताविसमें बोले—ज्ञानवान होय के अभिमान करे, तथा पापकर्ता मन में शका, भय नहीं लावे सो महा मूर्ख ।

२८ अट्ठाइसमें बोले—विना प्रयोजन सनने

ऊंच, नीच, ठिकाणे दौड़ावे, रूपवान स्त्री देखी चाहना करे अने कुसंकल्प विकल्प मनसुं उठावे, घणा पाप कर्म बांधे सो महा मूर्ख ।

२९ उन्नतीसमें बोले—छति शक्ति निरोग शरीर पाय कर तपस्यादि न करे सो महा मूर्ख ।

३० तीसमें बोले—पूर्व जन्मरी कमाईरा जोगसुं अशुभ कर्म भोगवतां, घणो हाय विलाप करे और अति रुद्र ध्यान चितवे सो महा मूर्ख ।

३१ इकत्तिसमें बोले—मनुष्य जन्म पायकर आत्म तत्व नहीं विचारे, अच्छा धर्म्म कारज की चिंतवना नहीं करे सो महा मूर्ख ।

३२ बत्तिसमें बोले—धर्म्मी पुरुष (आत्मार्थि) को आत्मसाधन करता देखी, तिणांरि निन्दा करे, तिणां उपरी द्वेष धरे, ईर्षा करे, तिणांरो अपवाद बोले तथा हांसि करे सो महा मूर्ख ।

३३ तेत्तिसमें बोले—श्री भगवंत वीतराग-

रा वचन माहि प्रतीत नहीं राखे, मन मांहि शका कखा करी आपरो जन्म बिगाड़े सो महा मूर्ख।

३४ चौत्तिसमें बोले—महा मोटा गुणवान उत्तम पुरुष होय तेहना गुणग्राम नहीं करे सो महा मूर्ख।

३५ पेंत्तिसमें बोले—ससार रूप दावानल, माहि काम, क्रोध, लोभ, मोहे करीने लिप्त रहे पिण बलति आग माहिसु सार वस्तु धर्म्म रत्न नहीं काढ़े सो महा मूर्ख।

३६ छत्तिसमें बोले—अनता काल रुलतां घणा पुण्य रा उदय सु मनुष्य रूप साताकारि विश्राम पायो, फिर पायकर विश्रामरी जग्या क्लेश बढ़ावे, आत्मा ने फिर दुःख माहे पटके सो महा मूर्ख।

३७ सेंत्तिसमें बोले—गया काल में अनता

जन्म मरण कर्या, अनता दुःख देख्या तिणने विसारे सो महा मूर्ख ।

३८ अड़तिसमें वोले—इण जन्मने विषे उत्तम कार्य नहीं करे, अथवा छति शक्ति पर उपकार नहीं करे सो महा मूर्ख ।

३९ उगनचालिसमे बोले—आयुष्यरो चपल पणो देख फेर ससार माहि, राचो माचो रहे, म्हारो थारो करे सो महा मूर्ख ।

४० चालिसमें वोले—विना घृत होम्या तृष्णा रूप अग्नि से ज्वाला उठ रही है तिण माहि फिर परिग्रह रूप घृत होमने शीतल कियो चहावे सो महा मूर्ख ।

४१ इगतालिसमें वोले—नरकरी अनती वेदना शास्त्र माहि सांभलि हिया माहि अच्छि तरह जाणिने फेर आत्मा ने समझावे नहीं, पाप करता शके वर्जे नहीं सो महा मूर्ख ।

४२ बयालिसमें बोले—जरा अवस्था आय

जावे, जोर विरलाय जावे, हाथ पांव थक जावे, ऐसी बेहालत में होजावे, आपणी दृष्टि सुं देखे सो पिण आपणा मन ने समझावे नहीं, और हाय २ धन धन करतोहिज रहे सो महा मूर्ख।

४३ तयालिस में बोले—अज्ञानि जीव आखो दिवस हाय विकल्प धंधा में पूरो करे, रात्रि प्रमाद माहि पूरी करे पिण दोय घड़ी समता समाधि लायकर आपणी आत्मारो साधन सुधारो नहीं करे, साठ हाथरी डोर कुआ मांहि नाखे पिण दोय हाथ डोर आपणा हाथ माहि नहीं राखे सो महा मूर्ख।

४४ चमालिसमें बोले—विना प्रयोजन जीव आपणो आत्माने दुर्गति माहि पटके, झूठो उपदेश देवे, पापरो उपदेश देवे, खोटी २ कुविद्या लोकाने सिखावे, महा मोटा अनर्थ करावे सो महा मूर्ख।

४५ पेतालिसमे बोले—जगत् चलाचल

मरतो प्रत्यक्ष देखे है, पिण मन मांहि मरवारो भय नहीं लावे, और लक्ष्मी परिवार सर्व स्थिर करी जाणे, पिण क्षण मांहि विनाश होय जायगा ऐसी नहीं विचारे सो महा मूर्ख।

४६ छीयालिसमें बोले—मूर्ख जीव संसार रा कारज अकाम है, जिणने तो सकाम कर जाणे, और आपणा निज ज्ञान ने प्रगट करणे से अनता काल रा दुःख दूर होय जावे ऐसो मोटो काम है तिणने अकाम करी जाणे सो महामूर्ख।

४७ सेंतालिसमें बोले—अज्ञानी जीव आपणो नाम कर्म्म वढ़ावा ने तथा कीर्ति वढ़ावा ने अनेक आरंभ करे महा मोटा पाप करे कुछ भय नहीं राखे, पिण अनेक भवांरे विपय भुगतना पड़ेगा, ऐसो विचार नहीं करे सो महा मूर्ख।

४८ अड़तालिसमें बोले—पूर्व भवरी कमाईरे जोग सुं लक्ष्मि पायकर् पाप कर्म्म करतां शंके नहीं सो महा मूर्ख।

४९ गुनचासमें बोले—केई अज्ञानि जीव शक्ति होय जद तो धर्मध्यान करी आत्मारो कल्याण करे नहीं, फिर वृद्ध अवस्था मे इन्द्रियां हिण पड़ जावे तन तिणरी इच्छा करे पिण वण नहीं सके—जैसे आग लग्या कुओ खुदावारो उपाय करे सो महा मूर्ख।

५० पचासमें बोले—शील, सतोष, क्षमा, दया, गम्भीरता, धैर्य, इत्यादि अनेक भला २ गुणारो वढ़ावारो अभ्यास नहीं करे तथा सुगुरु धर्मी पुरुषरी सगत नहीं करे सो महा मूर्ख।

५१ इकावनमें बोले—हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, वदचलन निंदा, ईर्षा, कपटाई, खोटी सगत इत्यादिक अनेक अशुभ कार्य नहीं छोड़े सो महा मूर्ख।

५२ बावनमे बोले—धर्म की वात तथा श्रद्धा नहीं राखे, धर्म्म करता आलस करे, काल चक्र माथा ऊपरि घूम रह्यो हे, किण एकरो

भरोसो नहि और अज्ञानि जीव धर्म्म करवारा वायदा करे सो, महा मूर्ख।

५३ तरेपनमें बोले—अभवि जीव दूजां को उपदेश देवे, आपणी आत्मा ने समझावे नहीं, ऐसे ही मूर्ख अज्ञानि, लोकां ने ठगवाने राजि करवा धर्म्म उपदेश देवे, आपणि कीर्ति वधारवा की आशा सहित, धर्म ध्यान क्रियादिक करे सो महा मूर्ख।

५४. चोपनमें बोले—आप पोते सुखिया है; और दूजां को दुखिया देखी, आप राजी होवे, दुखियों की हांसि करे दीन हीन दुर्बल की करुणा मन माहि नहीं आणे, दया नहीं लावे सो महा मूर्ख।

५५ पचावनमें बोले—ज्ञान पायारो सार कांई है आपणि आत्मा को कल्याण करना, दूजा जीवां ने उपदेश देणां ज्ञानका पुस्तकां पानां लखाय २ देणां, धर्म्म के मार्ग लगाय देणां,

जन्म, २ आर्यदेश, ३ उत्तम कुल, ४ लम्बो आउखो, ५ इन्द्रिय सम्पूर्ण, ६ निरोग शरीर, ७ साधु सन्तरी सेवा जोगवाई, ८ सूत्र सिद्धांत को सुणवो, ९ धर्म्म की श्रद्धा प्रतीत आवणी, १० काया कष्ट करी धर्म्म ध्यान करणो, इत्यादि सामग्रि कोई पुण्य का उदयसु पाय कर धर्म्म साधन नहीं करे सो महा मूर्ख।

६२ बासठमें बोले—जे वस्तु घणी दुर्लभ पामि तिणरो घणो यत्न करनो अज्ञानि समझे नहीं, मोह भाव वश कर ऋद्धि परिवार मांहि पचरह्यो है, म्हारो थारो कररह्यो है, पण देख सर्व यहां का यहा धरया रहेगा, कुछ भी साथ आवेगा नहीं जिण वास्ते मोह भाव अज्ञान भाव को छोड़ कर धर्म्म साधन कर, नहीं करेगा तो पिछे पश्चाताप करणा पड़ेगा, ऐसो नहीं विचारे सो महा मूर्ख।

६३ त्रेसठमें बोले—धर्म्म २ सब कोई

कहे, पिण धर्म्म को मर्म विचार कोई जाणे नहीं, धर्म्म तो, क्रोध मान माया लोभ, दूर करयासुं प्रगट होवे है, इणसे अनत ज्ञान प्रगटे है, कोई क्रिया को धर्म्म कहे है सो क्रिया में तो पुण्य को बंध है, अच्छो है पिण निर्जरा नहीं ऐसो जाण क्रोध मान माया लोभ को दूर करके आत्म ज्ञान प्रगट नहीं करे सो महा मूर्ख।

६४ चौसठमें बोले—जगत माहि जीव सर्व अन्धो अन्ध लगरह्या है, जहां देखो वहां आप आपणे स्वार्थ का बात बतावे है, परमार्थ का शुद्ध मार्ग दिखाणे वाला थोड़ा है, जिण वास्ते हे चैतन्य ? परमार्थि उत्तम ज्ञानवानरी परिक्षा कर, तिणरी सेवा कर जे ससार रूप समुद्र मांहि आपणो जीव अनादि कालसु डूब रह्यो है, ते अब मनुष्य जन्म रूप किनारो पाय कर, आत्माने डुबावाको मार्ग छोडे नहीं तिरवारो उपाय करे, नहीं सो महा मूर्ख।

६५ पैंसठमें बोले—अरे चेतन। धर्म्म करवा को अवसर चल्यो जाय है, क्षण २ में आउखो घटे है, पिण तु काइ विचारे है नहीं इसो मनुष्य जन्म पाय कर वृथा हार जावे है, अरे। मूर्ख। गयो अवसर फिर पिछो आवेगा नहीं नित्य नई तृष्णा बढ़ावे है पिण हियामाहि अच्छि तरह विचार देख, जो तृष्णा बधायां, ससार बढे है तृष्णा घटायो ससार घटे है, ऐसो निचार कर तृष्णा नहीं घटावे, सो महा मूर्ख।

६६ सासठमें बोले—कोई जगत माहि सुखी है नहीं, जहा देखो तहा सब जीव कर्म्मा का जोग सु दुखी हो रह्या छे, घणा अज्ञानी मोह भावसु कर ससार माहि सुख मान रह्या है, पिण सुख कदी भी होवे नहीं। ज्यु बलती आग माहि शीतलता होवे तो ससार माहि सुख होवे सुख तो आपणे सतोप भाव मे है सो संतोषको छोड़ कर मनकी विकलता वढ़ावे है सो महा मूर्ख।

६७ सड़सठमें बोले--हे चैतन्य! तु इण ससार मांहि कांइ लोभाय रह्यो छे, अज्ञान दशा माहि कांइ थारो म्हारो कर रह्यो छै, कोइ किणरो नहीं, सर्व आप आपणा स्वार्थने रोवे है जिणने स्वार्थ नहीं पोहचे सो राजो नहीं, पूगे सो राजि, अरे! भोला! तने मोह छाक चढ़ रही है, तिणसुं कांई सूझ तो नहीं, पिण आगे घणो दुख भोगनो पड़ेगा, ऐसो विचार कर ससार सुं उदासिनता भावे नहीं रहे सो महा मूर्ख।

६८ अडसठमें बोले—अरे! जीव! तुं देख आगे पूर्व जन्म मांहि अच्छि पुण्य कमाइ नहीं किनि तिणसुं यहा दुखो होय रह्यो है, पराधीन पणे आजीविका पूरी करे है। फिर इण जन्म माहि सुकृतकार्य करी खर्चि साथ बाधे नहीं सो आगे फिर भी दुखी होगा, ऐसो विचारो उपाय नहीं करे, सो महा मूर्ख।

६९ गुणतरेमें बोले—अरे! मूर्ख! तुं पाप

करतो कांइ विचारतो नहीं तु जाणे है लक्ष्मी भेली करूंगा सो दुख की वक्तमें काम आवेगा सो दुख की वक्तमें तो पाप को उदय आवे है, जेवारे पापरो उदय आवे है तिवारे लक्ष्मी पिण रहेगा नहीं लक्ष्मी तो पुण्यरा उदयमें हिज है ऐसो विचार मूर्छा छोड कर आत्मसाधन नहीं करे सो महा मूर्ख ।

७० सोत्तरमें बोले—अरे ! भोला ! तुं पेट भरवारे वास्ते सोच कर नये कर्म्मा का बंध काहेकुं बांधता है, जो कुछ पूर्वजन्म माहि कमाइ कर साथ लायो है, सो यहा आपो आप सहज ही मिलजायगा, सोच किया कुछ अधिको ओछो होवे नहीं ऐसो विचार, आत्मा स्थिर नहीं करे सो महा मूर्ख ।

७१ इकहत्तरमें बोले—जगत माहि आप आपणा मनका भगड़ा कर रह्या है, पिण तत्व वात कोई विचारे नहीं, तत्व वान को स्वमत में

एकज कही है, काम, क्रोध, लोभ मोह इण चार को छोड्या आत्मा निर्मल होवे है, याकुं छोड्या विनी मुक्ति नहीं, तप, जप, नियम व्रत सर्व इण सहित निष्फल है, ऐसी बात सर्व मत में कही है, पिण मन्द बुद्धि वाला जीव समझे नहीं, हक नाहक वाद विवाद करी जन्म पूरो करे सो महा मूर्ख।

७२ बहोत्तरमें बोले—दीपक सबको उद्योत करे है पिण आपणे नीचे सदा अन्धकार रहवे है कदीभि प्रकाश होवे नहीं, सो अज्ञानि जीव दूजां ने आछा २ उपदेश देवे पिण आप कूमार्ग चाले आपणो अज्ञान रूप अन्धकार दूर करीने ज्ञान रूप सूर्य प्रगट करे नहीं, पिण हे ! चैतन्य सर्व कर्म्मा को अंत करीने केवल ज्ञान रूप सहस्र सूर्य उद्योत आतमारे विषे प्रगट करेगा तिवारे मोक्ष नगर पहोचेगा, जहां अनंता सुख विलसेगा।

दोहा ।

बोल बोहत्तर ए कह्या, जिनागम अनुसार ।
सुणे सुणावे सरदहे, ते पावे भवपार ॥ १ ॥
ज्ञान बोहतरी नाम है, कीनि भवि उपकार ।
अम्बालाल अर्जि करे, मुझ प्रभु पार उतार ॥२॥
मैं अनाथ अतहि दुखी, डरयो देखी ससार ॥
ताते नाथ सरण ग्रही, अब मोहे वेग उतार ॥३॥
सत्त उन्निसे सात के, वदि दसमी फागुन मास।
रत्नपुरि माहि रची, पर निज आतम प्रकाश ॥४॥

(इति श्री आत्म विचार वैराग्य रूप ज्ञान बहोतरी सम्पूर्ण)



अथ व्यवहार समकित का ६७ बोल लिख्यते

पहले-सरदहणा ४, दूजे—लिंग ३, तीजे विनय १० प्रकार, चौथे—शुद्धता ३, पांचवें-लक्षण ५, छठे—दूषण ५, सातवें—भूषण ५, आठवें—प्रभाविक ८, नववें आगार ६, दसवें-जयणा ६, ग्यारवें—स्थानक ५, बारहवें भावना ६, ए ६७ बोल है।

पहला—चार सद्दहणा ।

१ नवतत्व जाणवानो उद्यम करे।

२ सूत्र सिद्धान्त का जाण आचार्यदिक जिन्हो की शुद्ध मन से सेवा करे।

३ जिन मारग गोपीने आपणो मत चलावो तिणकी संगत न करे।

४ सम्यक्त से भ्रष्ट होय तिकेरो परिचय न करे।

दूसरी तरह से (पाठान्तरे) भेद ४।

१ परमार्थ नो परिचय करे।

२ परमार्थना जाणकारनी सेवा करे।

३ धर्म्म पायने वम्यो तेहनी सगत वर्जे।

४ कुतीर्थियोंनी सगत वर्जे।

दूजे—तीन लिङ्ग।

१ जिम किन्नर जातिना देवता गीत नाद ने एकाग्रह चित्त देइने सुणे, तिम सूत्र सिद्धान्त का उपदेश सुणे ॥ १ ॥

२ जिम भुखाने अन्न उपरे अभिलाप होय, तिम शील, दया, चमादि, पालवा उपर अभि-ल प होय ॥ २ ॥

३ चतुर्विध सघ आदि देइने सर्व जीव ने शाता उपजावे ॥ ५ ॥

पाठान्तरे इसी का दूसरा।

१ जिम तरुण पुरुष रग राग उपर राचे

तिम वीतरागनी वाणी उपर राचे ।

२ तीन दिन को भूखो पुरुष खीर खाड को भोजन आदर सहित करे तिम वीतरागनो वाणी आदर सहित सुणे ।

३ जिम अणभणिया ने भणवारी चाह होय, अने भणवानी जोगवाई मिल्याथी हर्षवत होय, तिम वीतरागनो वाणी सुणीने हर्षवत होय ॥ ३ ॥

तोजे दश प्रकार का विनय ।

१ अरिहतजी की विनय भक्ति करे ।

२ सिद्धजी की विनय भक्ति करे ।

३ आचार्यजी की विनय भक्ति करे ।

४ उपाध्यायजी की विनय भक्ति करे ।

५ स्थिवरजी की विनय भक्ति करे ।

६ कुलकी विनय भक्ति करे ।

७ गच्छ समुदायकी विनय भक्ति करे ।

८ चतुर्विध सघकी विनय भक्ति करे ।

९ साधर्मि की विनय भक्ति करे।
१० क्रियावन्त की विनय भक्ति करे।

पाठान्तरे इसी का

१ अरीहतजी का विनय।
२ सिद्धजी का विनय।
३ आचार्यजी का विनय।
४ उपाध्याय जी का विनय।
५ स्थिवरजी का विनय।
६ तपस्विजी का विनय।
७ बहुश्रुतीजी का विनय।
८ सभोगी का विनय।
९ चार तीर्थ का विनय।
१० साधर्मि का विनय।

चौथे सम्यक्तनी तीन शुद्धता (परीक्षा)

१ श्री अरीहत देवजो ने तो देव जाणे।
२ श्री सुसाधु महा पुरुषाने गुरु जाणे।
३ दया क्षमा ये धर्म जाणे।

पाठान्तरे तीन शुद्धता।

१ मन शुद्धता—मने करी श्री वीतराग देवने ध्यावे।

२ वचन शुद्धता—वचने थकी गुणग्राम श्रीवीतराग देवना करे।

३ काया शुद्धता—कायाये करी श्री वीतराग देव ने नमस्कार करे।

पाचमे—लक्षण पाच।

१ सम—शत्रु मित्र उपर सरीषा भाव राखे।

२ समवेग—वैराग्य भाव राखे।

३ निर्वेद-आरंभ परिग्रह सुं निवर्ते (छोडे)।

४ अनुकंपा—पर जीवने दुखी देखीने करुणा करे तथा मारते जीवने छोडावे।

५ आस्ता—जीवादिक द्रव्यना सूक्ष्म भाव सांभली ने मुरजावे नहीं, याने जिन वचन उपर आस्ता (विश्वास) राखी दृढ़ रहे।

छठे—सम्यक्तना पांच दुषण (अनाचार)

१ शका—श्री जिन वचन मांहे संदेह (शंका)

राखे तो दोष। अर्थात् जिन वचन पर निशंक पणे वर्ते तो दोष टले।

२ कखा—अन्य तीर्थि नो आडम्बर देखीने चाह करे तो दोष लागे, अनेरा धर्म्म की वाछा करे नहीं तो दोष टले।

३ वितिगिच्छा—करणीरे फल माहे सदेह आणे, वा, साधु साध्वीना मलिन वस्त्र देखीने दुर्गच्छा करे तो दोष अतिचार लागे, श्री तीर्थंकरदेवजीनी आज्ञा सहित, करणी करे छे, ते उपर वितिगिच्छा आणे नहीं, तो दोष टले।

४ परपाखडी प्रशसा—अनेरा तीर्थि की कीर्त्ति करे तो दोष अतिचार लागे, परदर्शणि की प्रशसा शोभा गुण कीर्त्ति करे नहीं तो दोष टले।

५ परपाखडी सथव—अन्य तीर्थिरे पासे जाणो आणो राखे, तथा सगत करे तो दोष अतिचार लागे, परपाखडी को परचो सग करे नहीं तो दोष टले।

सातमे—सम्यक्तका पाच भूषण।

१ जिन शासन के विषय चतुराई राखे और धीरज वत होय।

२ जिन मारगने तथा गुणांने दिपावे।

३ जिन शासन विषय सुसाधु, साध्वी गुणवान तिणो की भक्ति सेवा करे।

४ अनेरा पुरुष ने धर्म के विषे स्थिर करे।

५ चतुर्विध सघकी सेवा करे।

आठमें—सम्यक्तका आठ प्रभाविक।

१ जिण काले जितना सूत्र होय, ते भणी अन्य जीवो ने प्रतिबोधी उन्नति करे।

२ धर्म कथा कहने में चतुर होवे।

३ प्रत्यक्ष दृष्टान्त पूर्वक अन्य धर्मी से वाद कर धर्म दीपावे।

४ निमित्त ज्ञाने करी भूत भविष्यत् वर्तमान की वात कहे।

५ विकट तपस्या करी धर्मकी उन्नति करे।

सालाप—विशेष सिष्ठ वचने बनलावो।

दान—प्रतिलाभवों। प्रदान बहुमान देवो। वन्दणा नमस्कार करवो। गुणग्राम जस, वर्णन करवो।

अथ—सम्यक्तना छ स्थानक।

१ चारित्र धर्म्म रूपी वृक्ष अने सम्यक्त रूपी मूल (बीज)।

२ चारित्र धर्म्म रूपीयो नगर अने सम्यक्त रूपी दरवजो।

४ चारित्र धर्म्मरूपी महेल अने सम्यक्त रूपी नीव।

३ चारित्र धर्म्म रूपी आभूषण (गहणा) सम्यक्त रूपी मजुस (सदुक)।

५ चारित्र धर्म्म रूपी वस्तु (क्रियाणो) अने सम्यक्त रूपी दुकान।

६ चारित्र धर्म्म रूपी भोजन अने सम्यक्त रूपी थाल।

बारहवें सम्यक्तनी छ भावना ।

१ जीव द्रव्य का चेतना लक्षण छे ।

२ जीव द्रव्य नित्य शास्वतो छे ।

३ जीव आठ कर्म्मों का कर्ता छे ।

४ जीव कर्म्मों का भोक्ता छे ।

५ भव्य जीव आठ कर्म्म क्षय करी मोक्ष पावे ।

६ ज्ञान दर्शन चरित्र मोक्ष का उपाव छे।

पाठान्तरे ६ भावना ।

१ पेली भावना—समदृष्टी पुरुष आपके चेतन में असंख्या परदेशी जाणे ।

२ दूसरी भावना—समदृष्टी पुरुष आपके चेतन ने आठ कर्मों का कर्ता जाणे ।

३ तीसरी भावना—समदृष्टी पुरुष आपके चेतन ने आठ कर्मों का भोक्ता जाणे ।

४ चौथी भावना—समदृष्टी पुरुष आपका आठ रुचिक प्रदेश सिद्ध समान जाणे । पा०

५ पांचवी भावना समदृष्टी पुरुष आपके चेतन ने मोक्ष जाने वाला जाणे ।

६ छट्ठी भावना समदृष्टी पुरुष मोक्ष का चार कारण जाणे, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप ।

पाठान्तर भावना ।

१ अनित्य भावना—ते संसारना सर्व पदार्थ धन जवन, शरीर, कुटुम्बादि सर्व अनित्य छे अथीर छे विनाश पामे ऐसो चितवे ते भावना भरतेश्वरजी ने भाई ।

२ अशरण भावना—ते जीव ने रोग मरण पीड़ादिक आवे तो बधव कुटुम्ब परिवार नो शरणो इच्छे नहीं ते, दुख आपदा पड्या निवार सके नहीं ते भावना अनाथीजी भाई ।

३ ससार भावना—ते यो जीव कर्म्म करीने चार गति चौरासी लाख जीवा योनि माहि परिभ्रमण करीने बाप फिटी बेटो थयो बेटो फिटी बाप थयो ते भावना शालीभद्रजी ने भाई ।

४ एकत्व भावना—ते यो जीव परलोक थकी एकलो ही आयो अने एकलो ही जासी, भला बुरा कर्म्म एकलो ही भोगवसिं ते भावना नमिराजा ने भाई।

५ अशुचि भावना—ते यो शरीर सदा ही अशुचिनो भाजन छे मास लोही नख नसा जाले करीने तथा चामड़ी करीने विंट्यो छे, तेहने धोयां शुचि न होवे इम चितवे ते भावना सनतकुमार जी चक्रवर्ति जी ने भाई।

६ अन्य भावना—धन कुटुम्व सब मेरे से जुदा है ते भावना मृगापुत्रजी ने भाई।

यह सड़सठ भेद व्यवहार सम्यक्त के जाणवा।

॥ इति ६७ बोल समाप्त ॥

॥ इति समाप्तम् ॥

श्रीरस्तु शुभं भवतु।

५ पाचवी भावना समदृष्टी पुरुष आपके चेतन ने मोक्ष जाने वाला जाणे।

६ छट्टी भावना समदृष्टी पुरुष मोक्ष का चार कारण जाणे, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप।

पाठान्तर भावना।

१ अनित्य भावना—ते ससारना सर्व पदार्थ धन जबन, शरीर, कुटुम्बादि सर्व अनित्य छे अथीर छे विनाश पामे ऐसो चितवे ते भावना भरतेश्वरजी ने भाई।

२ अशरण भावना—ते जीव ने रोग मरण पीड़ादिक आवे तो बधव कुटुम्ब परिवार नो शरणो इच्छे नहीं ते, दुख आपदा पड्या निवार सके नहीं ते भावना अनाथीजी भाई।

३ ससार भावना—ते यो जीव कर्म्म करीने चार गति चौरासी लाख जीवा योनि माहि परिभ्रमण करीने बाप फिटी बेटो थयो बेटो फिटी बाप थयो ते भावना शालीभद्रजी ने भाई।

४ एकत्व भावना—ते यो जीव परलोक थकी एकलो ही आयो अने एकलो ही जासी, भला बुरा कर्म्म एकलो ही भोगवसि ते भावना नमिराजा ने भाई ।

५ अशुचि भावना—ते यो शरीर सदा ही अशुचिनो भाजन छे मास लोही नग नसा जाले करीने तथा चामड़ी करीने विंट्यो छे, तेहने धोयां शुचि न होवे इम चिन्ते ते भावना सनतकुमार जी चक्रवर्ति जी ने भाई ।

६ अन्य भावना—धन कुटुम्ब सब मेरे से जुदा है ते भावना मृगापुत्रजी ने भाई ।

यह सड़सठ भेद व्यवहार सम्यक्त के जाणवा ।

॥ इति ६७ बोल समाप्त ॥

॥ इति समाप्तम् ॥

श्रीरस्तु शुभं भवतु ।

पुस्तक मिलनेका पता—

अगरचद भैरोंदान सेठिया

का

श्री जैन विद्यालय

महोल्ला मरोटीयों का

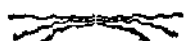
बीकानेर (राजपूताना)

या

अगरचद भैरोंदान सेठिया।

श्री जैन ज्ञान प्रचारक—

कन्या पाठशाला।



मोहल्ला मरोटियोंका

बीकानेर (राजपूताना)

यह पुस्तक जैसा लिखा हुवा ग्रन्थ पुस्तक पानमें देखा वांचा वैसा ही अल्प बुद्धि अनुसार छपाया है तत्व केवलीगम्य ।

॥ सोरठा ॥

ऐसो अर्थ मतमान, सुत्र ने लागे ठवक ।
तह मेव सत्य जान, प्रसिद्ध करता इम वीनवे ॥

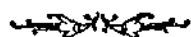
शान्ति । शान्ति ॥ शान्ति ॥।
सेव भते सेव भते ।

आचर, कानो, मात, अनुस्वार ह्रस्व दीर्घ ओछो अधिको, आगो पाछो लिख्यो होय या छपणे में रहगयो होय तस मन वचन काया करी मिथ्या दुष्कृत देत हुँ ।

विनीत—
भैरोदानजी सेठीया तत्लघु पुत्र युगराज सेठिया

॥ कल्याणमस्तु ॥

पत्र व्यवहार।



चिट्ठी पत्री नीचे लिखे पतेसे भेजे। अपना ठीकाना पता नागरी (हिन्दी) अंग्रेजी दोनो भाषामें साफ साफ अक्षरो से पूरा लिखे गामओर शहर का नाम, पोष्ट आफिस तथा जिला अंग्रेजी में साफ साफ लिखे और डाक खर्च के लिये टिकट भेजे। किताब हमारे यहा स्टाक में तैयार होगा तो भेज दिया जायगा। अगर किसीको पहले पूछना हो तो जवाबी पोस्टकार्ड लिखकर पूछ लेवे।

अगरचंद भैरोंदान सेठिया।

श्रीजैन ग्रन्थालय।

मोहल्ला मरोटीया का।

बीकानेर (राजपूताना)